शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,

Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

राधे मोहन राय कृत कहानी संग्रह 'बही लिखकर क्या होगा' का शिल्प

डा0 नरेश कुमार सिहाग
गुगन निवास 26, पटेल नगर भिवानी (हरियाणा)

सारांश

बरेली मूल के अलवर निवासी श्री राधेमोहन राय साहित्य के क्षेत्र में एक जाना माना नाम है। आप तीन भाषाओं हिन्दू, उर्दू और अंग्रेजी पर समान रूप से अधिकार रखते हैं, तीनों भाषाओं में आप की अनेकों पुस्तकें प्रकाशित है। साहित्य के क्षेत्र में आप मूल लेखक के रूप में, एवं सम्पादन के लिये जाने जाते हैं। आपने सभी विद्याओं में लेखन किया है – कविता, कहानी, उपन्यास, समीक्षा, समालोचना, संस्मरण, आत्मकथा आदि। श्री राधेमोहन राय ने पहली कविता तो आठवीं कक्षा में पढ़ते थे तभी लिखी थी। नौवीं दसवीं के काल में स्कूल के मैग्जींन में उनका संगीत छपा था, फिर यह क्रम जारी रहा जो 75 वर्ष की अवस्था के उपरान्त आज भी जारी है। यह स्पष्ट है कि श्री राम ने हिन्दी साहित्य में मूल रूप से कवि के रूप में ही कदम रखा था। उनकी रचनायें तत्कालीन पत्र पत्रिकाओं में छपने लगी थी। श्री राधेमोहन राय एक प्रयोगधर्मी रचनाकार हैं। आपने काव्य, कथा, उपन्यास, कहानी आदि सभी विधाओं में साहित्य सृजन किया है और अपनी बहुआयामी प्रतिभा का परिचय आपने दिया है। उनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक योगदान कहानी संग्रह 'बही लिखकर क्या होगा' है इस संग्रह में आपने अपनी नवोन्भेशशालिनी प्रतिभा का परिचय दिया है।

'शिल्प' का अर्थ और परिभाषा

शिल्प को रचना का बाह्यपक्ष कहा जा सकता है। कथ्य की भांति, शिल्प का भी, अपना महत्व होता है। जैसे आत्मा को शरीर ही साकार करता है, अतः आत्मा की सबलता के साथ शरीर की सुघड़ता आवश्यक है। ठीक उसी प्रकार, मार्मिक कथ्य के साथ प्रभावशाली शिल्प का होना आवश्यक है। शिल्प का शाब्दिक अर्थ है किसी चीज को बनाने या रचने का ढंग अथवा तरीका। किसी वस्तु के रचने की जो जो विधियां प्रक्रियाएं होती हैं उनके समुच्य को शिल्प–विधि नाम से पुकारा जाता है। सरल भाषा में यदि कहा जाए तो शिल्प से अभिप्रायः हाथ से कोई वस्तु तैयार करने तथा दस्तकारी से है। शिल्प के इस शब्द का प्रयोग ठोस और स्थिर रूप वाली ललित कलाओं के संदर्भ में ही होता रहा है, लेकिन कहानी या काव्य मात्र के संदर्भ में रूप, ढांचा, बनावट, बुनावट आकल्पन या स्थापत्य जैसे शिल्प विधायी पदों का प्रयोग कुछ ढीले–ढाले और अनिश्चित अर्थो में हो सकता है। क्योकि साहित्यश प्रत्यक्षीकरण का विषय नहीं। फिर भी हमारी

विवशता है कि इन्हीं शब्दों से काम चलाना पड़ता है।

डॉ. त्रिभुवन सिहं का मानना है – ''शिल्प अथवा रचना का सम्बन्ध उस परिणति से है, जो कृति की सभी रचना विधायी तत्वों के सहयोग से कृतिकार की प्रतिभा द्वारा प्राप्त होती है। डॉ. उषा सक्सेना के अनुसार– शिल्पविधि का अर्थ हुआ उपन्यास के प्रस्तुत करने की प्रणाली। अतएव शिल्प विधि के प्रस्तुत करने की प्रणाली । अतएव शिल्व विधि के अर्न्तगत वे समस्त तत्व आ जाते हैं जो उपन्यास का निर्माण करते हैं । डा. आदर्श सक्सेना का कहना है– ''शिल्पविधि के अर्न्तगत दो तत्व आते हैं – आन्तरिक और बाहय। आन्तरिक तत्व वो होता है जो साहित्यकार के मन में घटित होती है। जो आन्तरिक अनुभूति को अभिव्यक्ति देने के उद्देश्य से प्रयुक्त किया जाता है दूसरा प्रकट एवं दृश्य, परन्तु दूसरे की सार्थकता इस पर निर्भर होती है कि वह कहां तक दूसरे को अभिव्यक्ति देने में सफल होता है। इस प्रकार शिल्प आन्तरिक एवं बाह्य प्रक्रियाओं का वह संश्लिष्ट रूप है, जो अपने समग्र रूप में कलाकार के अन्तर्मन को पाठक या दर्शक के नेत्र–पटल पर सही रूप से चित्रित कर देता है। शिल्प के अर्न्तगत भाषा, छन्द, अलंकार, प्रतीक, बिम्ब आदि को शामिल किया जाता है। अतः उक्त बिन्दुओं के आधार पर 'बही लिखकर क्या होगा' कहानी संग्रह के शिल्प का संक्षिप्त विवेचन यहां अभीष्ट है।

भाषा–संरचना

'बही लिखकर क्या होगा' की कहानियों की भाषा अत्यन्त सरल और सुबोध, किन्तु परिष्कृत तथा परिमार्जित है। लेखक, राधे माहन राय ने अधिकांश तद्भव, देशज शब्दावली का प्रयोग किया है साथ में प्रचलित विदेशज व तत्सम शब्द भी आए हैं । जिससे इन कहानियों में कलात्मक सौन्दर्य के साथ अर्थ गम्भीर्य और भाव सबलता भी आ गई है। यह भाषा का ही कमाल है कि लेखक बड़े–बड़े विषयों को कहानी जैसे छोटे माध्यम में कहने में सफल हुआ है। राधे मोहन राय हिन्दी भाषा के उच्चकोटि के शिल्पी हैं। यह बात उन्होने अपनी कहानी–संग्रह 'बही लिखकर क्या होगा' में सिद्ध की है – 'बड़ी दूर से लाया रे बाबू बढ़िया गज.....। कहीं–कहीं, अधिकांश कहानियों में लेखक ने तत्सम् शब्दावली के सथान पर तत्भव शब्दों का प्रयोग किया है । यह प्रयोग, दुष्कर न होकर सहज–सुन्दर तथा भावाभिव्यक्ति में सहायक है तथा तत्सम्, शब्द प्रयोग व तत्भव शब्द प्रयोग निम्न है झाड़, छूकर, तराश, खस, ठठेरा, दिवास्वप्नों, सिल, कुटवा, खुटखुट आदि। उनकी कहानियों में राजस्थान और उतर प्रदेश के लोकप्रचलित देशज शब्दों का भी प्रचुरता से प्रयोग हुआ है। जो कहानी के सौन्दर्य में वृद्धि करते हैं। जैसे कसैला, डयोढी, भगौनों, पुर्जे आदि।

उनकी कहानियों में अंग्रेजी, अरबी, फारसी आदि विदेशी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। किन्तु ऐसा शब्द प्रयोग, साभिप्राय होने के कारण, कहानियों को और भी प्रभावशाली बना देता है। अंग्रेजी, उर्दू और फारसी शब्द– तसव्वुर, गुलजार मिलेनियम, ऐंटीगोनन, बदहवास, पोर्टिको, लैक्चरर, इंसिस्ट, मोहताज, बुटखाना, नेटिव्स, जायदाद आदि।

निष्कर्ष यह कि 'बही लिखकर क्या होगा' की भाषा अत्यन्त परिनिष्ठित और प्रभावशाली है। ऐसा भाषा प्रयोग विरले लेखकों में देखने को मिलता है। विभिन्न गुणों और शब्द शक्तियों

के प्रयोग से भाषा का सौन्दर्य एवं द्विगुणित हो गया है। अतः भाषा की दृष्टि से इसे एक सफल कहानी–संग्रह माना जा सकता है।

अलंकार–योजना

अलंकार कविता–कामिनी के सौन्दर्यवर्द्धक उपकरण होते हैं। जैसे स्त्रियां अपना सौन्दर्य बढ़ाने के लिए विभिन्न आभूषणों का प्रयोग करती हैं वैसे ही कविता की सौन्दर्य–वृद्धि हेतु, कवि विविध अलंकारों का विधान करते हैं। किन्तु कविता हो या कहानी, अलंकारों का प्रयोग सहज, स्वाभाविक और प्रसंगानुकूल होना चाहिये। साथ ही अलंकारों का अतिशय प्रयोग भी अनुचित है, क्योकि उससे सौन्दर्य बढ़ने की बजाय घट सकता है। अस्तु 'बही लिखकर क्या होगा' में अलंकार–योजना बड़े स्वाभाविक ढंग से हुई है। अलंकारों के सहज, स्वाभाविक और अनायास प्रयोग के कारण अधिकतर कहानियों का काव्य– सौन्दर्य देखते ही बनता है। शब्दालंकारों और अर्थालंकारों का समान रूप में प्रयोग हुआ है। अनुप्रास उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, पुनरूक्ति आदि लेखक के प्रिय अलंकार हैं। जिनके उदाहरण यहां प्रस्तुत हैं

अनुप्रास

'भ' से भिश्ती, 'म' से मशक।

'बाबू बढ़िया गजक

बबू बढ़िया गजक।

'अच्छा अध्ययन, मनन तो रात ग्यारह बजे के बाद ही होता है। यहां पर 'भ', 'ब', अ और ब वर्ण की आवृति हुई है अतः अनुप्रास अलंकार है।

उपमा

बड़ा डरावना सा लगता अधिंयारा।

'गिर गया पत्र आंधी में झड़े पात सा।

और जाने कैसा–कैसा हो आया मन सोमश का।

पुनरूक्ति

दोनों अपने–अपने कमरों से बाहर आ चहल–कदमी करने लगे । आंखे खोयी–खोयी कुछ ढूंढती सी। जो अपने साथ लाता कैसे कैसे विचार।

रूपक

चंद सिरहाने आकार बैठे

जुगनू गीत सुनाये,

मेरे अंतर्मन की पीड़ा

शायद कम हो जाए।

विवेच्य संग्रह की कहानियों से अलंकारों के कतिपय उदाहरण ही यहां प्रस्तुत किये गये हैं, जबकि वास्तविकता यह कि इनमें अलंकार भरे पड़े हैं। कहीं कहीं तो एक साथ अनेक अलंकारों का प्रयोग हुआ है, जो सहज सुन्दर है।

निष्कर्ष यह कि लेखक का अलंकारों के प्रति विशेष आग्रह भले ही न हो, परन्तु अलंकार प्रयोग में वे सिद्धहस्त हैं तथा इसी कारण 'बही लिखकर क्या होगा' संग्रह की कहानियों में विभिन्न अलंकारों की सुन्दर छटा सर्वत्र दिखाई पड़ती है। अलंकारो का अनायास प्रयोग लेखक के काव्य कौशल का परिचायक है, तो काव्य सौन्दर्य का विधायक।

प्रतीक–विधान

'प्रतीक' का अर्थ है – आकृति, रूप या प्रतिरूप। इनके माध्यम से लेखक अमूर्त भावों अथवा विचारों को मूर्त बनाकर प्रस्तुत करता है तथा उसकी यह सांकेतिक अभिव्यक्ति बड़ी प्रबल और प्रभावशाली होती है। कई बार प्रत्यक्ष व्यक्ति या वस्तु जो प्रभाव नहीं छोड़ पाते, उनका प्रतिरूप उससे कहीं अधिक गहरा प्रभाव डालता है। अतः काव्य में प्रतीकों का बड़ा महत्व होता है तथा समर्थ कवि इसीलिए अपने काव्य में सार्थक प्रतीक–विधान करने का प्रयास करता है।

लेखक राधे मोहन राय ने भी, अपनी कहानियों में बड़ा सुन्दर प्रतीक–विधान किया है। उनके प्रतीकों में व्यापकता और विविधता है, सार्थकता और सटीकता है। कतिपय उदाहरण यहां द्रष्टव्य है –

धूप ढ़लने का समय
खिड़कियां धूमि हुई
अब नहीं बजती कहीं शहनाईयां।
न जाने जमाना किधर जा रहा है।
न जाने मालूम क्या वक्त अब आ रहा है
होना तुम्हारा
गंगा की धारा
जुगनू का गीत
चॉदनी में नहायी सी अनुभूतियां।
झड़ रहे मधु के नए छते.....।

यहां निश्चिय ही, 'बही लिखकर क्या होगा' की प्रतीक योजना अत्यन्त प्रभावशाली है, लेखक राधे मोहन राय ने प्राकृतिक, सांस्कृतिक, पौराणिक, सामाजिक आदि सभी प्रकार के प्रतीकों का सफल प्रयोग अपनी कहानियों में किया है।

सूक्ति प्रयोग

सूक्ति का अर्थ है सुन्दर उक्ति। अनुभव–सघनता तथा काव्य कौशल के संयोग के कारण जब सामान्य उक्ति विशिष्ट बन जाती है, तो उसे सूक्ति कहा जाता है। सूक्ति में कलात्मकता के साथ प्रभावोन्विति की अपूर्व क्षमता होती है। इसीलिए सूक्तिकाव्य लोकप्रिय होकर अमर हो जाता है। अपने कला–कौशल से राधे मोहन राय ने भी अद्‌भूत सूक्तिकाव्य की सृष्टि की है। 'बही लिखकर क्या होगा' की कहानियां इसका प्रमाण है।

उदाहरण स्वरूप यहां प्रस्तुत हैं –

'मानव सेवा ही माधव सेवा'

''आओ मेरा हाथ थाम लो, सवश्रेष्ठ तो अभी शेष है,

जीवन का वह स्वर्णिम अंत।

'नंगा नहायेगा क्या और क्या निचोड़ेगा।

सुनो सबकी करो वही जो करने का मन हो तुम्हारा।

दिन ही क्यों, कितने तो

वर्श चुरा ले गई उम्र हमारे–तुम्हारे जीवन के।

न जाने जमाना किधर जा रहा है

न मालूम क्या वक्त अब आ रहा है।

सूक्ति काव्य का चरमोत्कर्ष माना जा सकता है। कोई समर्थ कवित ही ऐसे कालजयी काव्य की रचना कर सकता है। इस दृष्टि से राधे मोहर राय सचमुच एक श्रेष्ठ लेखक सिद्ध होते हैं। इन्होंने जिस प्रकार अपनी कहानियों में सुक्तिकाव्य का सृजन किया है, उसमें अनुभव तथा कलात्मकता का मणिकांचन संयोग दृष्टिगोचर होता है।

निष्कर्ष

सम्पूर्ण विवेचन के आधार पर, निष्कर्ष स्वरूप, कहा जा सकता है कि 'बही लिखकर क्या होगा' एक महत्वपूर्ण कहानी संग्रह है, जिसके माध्यम से लेखक श्री राधे मोहन राय ने अतीत की यादों, युगबोध और जीवन बोध की अभिव्यक्ति की है। उनके 'कहानी संग्रह' कि कहानियों की प्रमुख विशेषता है। इन्होने देश और समाज में जीवन और जगत में जो कुछ निरखा–परखा है। उसे ज्यों–का–त्यों अपनी कहानियों में व्यक्त कर दिया है। अपनी संवेदन और प्रतीकात्मकता के कारण इनकी अधिकांश कहानियां बड़ा गहरा और व्यापक प्रभाव छोड़ती हैं, जिनकी गूंज दूर तक सुनी जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. नरेश सिहाग बोहल एडवोकेट– राधेमाहन राय का कहानी संग्रह बही लिखकर क्या होगाः एक अनुषीलन (एम.फिल. शोध प्रबन्ध) पृष्ठ **11**
2. नरेष सिहाग बोहल एडवोकेट– राधेमाहन राय का कहानी संग्रह बही लिखकर क्या होगाः एक अनुशीलन (एम.फिल. शोध प्रबन्ध) पृष्ठ **24**
3. नरेश सिहाग बोहल एडवोकेट– राधेमाहन राय का कहानी संग्रह बही लिखकर क्या होगाः एक अनुशीलन (एम.फिल. शोध प्रबन्ध) पृष्ठ **11**
4. नरेश सिहाग बोहल एडवोकेट– राधेमाहन राय का कहानी संग्रह बही लिखकर क्या होगाः एक अनुशीलन (एम.फिल. शोध प्रबन्ध) पृष्ठ 35

5 राधेमोहन राय : . नरेश सिहाग बोहल एडवोकेट– राधेमाहन राय का कहानी संग्रह बही लिखकर क्या होगाः *एक अनुशीलन* (एम.फिल. शोध प्रबन्ध) पृष्ठ **57**

6. कालिका प्रसादः वृहत् हिन्दी कोष, पृष्ठ संख्या **1239**

7. डा0 त्रिभुवन सिहं : **हिन्दी उपन्यासः शिल्प और प्रयोग**, पृष्ठ संख्या **240**
8. डा0 उषा सक्सेनाः *हिन्दी उपन्यासों का शिल्पगत विकास*, पृष्ठ संख्या **71**
9. डा. आदर्श सक्सेना : *हिन्दी के आंचलिक उपन्यास और शिल्प विधि*, पृष्ठ संख्या **481**
10. राधेमोहन राय : कहानी, *मेरा कुछ सामान* पृष्ठ **4**
11. राधेमोहन राय : कहानी, *अंतहीन* पृष्ठ **146**
12. राधेमोहन राय : कहानी, *मेरा कुछ सामान* पृष्ठ **2**
13. राधेमोहन राय : कहानी, *मेरा कुछ सामान* पृष्ठ **4**
14. राधेमोहन राय : कहानी, *एक पुराना मौसम* पृष्ठ **7**
15. राधेमोहन राय : कहानी, *एक पुराना मौसम* पृष्ठ **8**
16. राधेमोहन राय : कहानी, *एक पुराना मौसम* पृष्ठ **8**
17. राधेमोहन राय : कहानी, *एक पुराना मौसम* पृष्ठ **10**
18. राधेमोहन राय : कहकहानी, *एक पुराना मौसम* पृष्ठ **20**
20. राधेमोहन राय : कहानी, *मन बुढ़ाता नही* पृष्ठ **73**
21. राधेमोहन राय : कहानी, *दूसरा पहलू* पृष्ठ **104**
22. राधेमोहन राय : कहानी, *अन्तहीन* पृष्ठ **144**
23. राधेमोहन राय : कहानी, *मन बुढ़ाता नही* पृष्ठ **77**
24. राधेमोहन राय : कहानी, *बीतता पल* पृष्ठ **24**
25. राधेमोहन राय : कहानी, *बीतता पल* पृष्ठ **20**
26. राधेमोहन राय : कहानी, *एक पुराना मौसम* पृष्ठ **12**
27. राधेमोहन राय : कहानी, *कोहरा छटेगा जरूर* पृष्ठ **30**
28. राधेमोहन राय : कहानी, *मन मुढ़ाता नहीं* पृष्ठ **86**
29. राधेमोहन राय : कहानी, *दूसरा पहलू* पृष्ठ **104**